IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

कपड़े कारखानों में कार्यरत श्रमिकों की सामाजिक स्थिति का अध्ययन

(मध्यप्रदेश के धार जिले की पिथमपुर नगर के विशेष संदर्भ में)

अर्जुन अस्ताया

शोधार्थी, डॉ. बी. आर. अंबेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय महू, इंदौर (म.प्र.)

ऐतिहासिक रूप से, यह दुनिया में औद्योगीकरण के सबसे सरल और आसान मार्गों में से एक है। विश्व स्तर पर इस उद्योग ने, कई अन्य उद्योगों के विपरीत, गरीब, कम शिक्षित, अकुशल आबादी, विशेषकर महिलाओं को काम करने और कमाने का एक अनूठा अवसर दिया क्योंकि इसे सीखना आसान है और इसके लिए कम तकनीकी जानकारी की आवश्यकता होती है। वर्तमान में, दुनिया भर के कई देशों के लिए, कपड़ा उद्योग प्रमुख औद्योगिक रोजगार और निर्यात कमाने वाला क्षेत्र है। हालाँकि, दुनिया भर में, विशेष रूप से विकासशील देशों में उद्योग की तीव्र वृद्धि के कारण, इसके कार्यबल को खराब कामकाजी माहौल, जबरन श्रम, लंबे समय तक काम करने, खराब भुगतान और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। हालाँकि ये सभी कारक श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान के लिए गंभीर खतरा हैं।

कुंजी शब्द – परिधान, कारखाना, श्रमिक,स्वास्थ्य

परिधान उद्योग ने, अपनी स्थापना के बाद से, कई देशों के औद्योगीकरण की खोज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ऐतिहासिक रूप से, यह दुनिया में औद्योगीकरण के सबसे सरल और आसान मार्गों में से एक है। विश्व स्तर पर इस उद्योग ने, कई अन्य उद्योगों के विपरीत, गरीब, कम शिक्षित, अकुशल आबादी, विशेषकर महिलाओं को काम करने और कमाने का एक अनूठा अवसर दिया क्योंकि इसे सीखना आसान है और इसके लिए कम तकनीकी जानकारी की आवश्यकता होती है। कपड़ा उद्योग में काम करने वाले अधिकांश कार्यबल के लिए, यह पहला और एकमात्र रोजगार का अवसर था। चूंकि पहुंच की मांग बहुत अधिक थी और बहुत सीमित या कोई विकल्प नहीं था, यह विशाल श्रम बल कम मजदूरी दरों पर आसानी से उपलब्ध था।

आसानी से उपलब्ध कार्यबल और कम वेतन दरों दोनों ने वैश्विक स्तर पर उद्योग के विस्तार को बड़ी तेजी से गति दी। इसके अलावा, अनुकूल माहौल ने कई देशों के लिए निर्यात आय बढ़ाने में संलग्न होने का एक बड़ा अवसर भी पैदा किया। वर्तमान में, दुनिया भर के कई देशों के लिए, कपड़ा उद्योग प्रमुख औद्योगिक रोजगार और निर्यात कमाने वाला क्षेत्र है। हालाँकि, दुनिया भर में, विशेष रूप से विकासशील देशों में उद्योग की तीव्र वृद्धि के कारण, इसके कार्यबल को खराब कामकाजी माहौल, जबरन श्रम, लंबे समय तक काम करने, खराब भुगतान और दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। हालाँकि ये सभी कारक श्रमिकों के स्वास्थ्य, सुरक्षा और सम्मान के लिए

गंभीर खतरा हैं। दूसरी ओर, उद्योग ने तेजी से विस्तार का अनुभव किया और खुद को दुनिया के प्रमुख उद्योगों में से एक के रूप में स्थापित किया।

अध्ययन प्रमुख रूप से प्राथमिक ऑकड़ों पर आधारित है।

धर्म –:

धर्म व्यक्ति के दैनिक क्रिया–कलापों के साथ–साथ उसके सम्पूर्ण विकास को प्रभावित करता है। अतः शोध अंतर्गत उत्तरदाताओं के धर्म के बारे में जानने का प्रयास किया गया है जो कि इस प्रकार है –:

तालिका क्रमांक – 01

उत्तरदाता का धर्म

धर्म	आवृत्ति	प्रतिशत
हिंदू	240	80.0
मुस्लिम	30	10.0
बौद्ध	30	10.0
कुल	300	100.0

पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र में कार्य करने वाले श्रमिकों में सबसे अधिक हिंदू धर्म को मानने वाले उत्तरदाता है। भारत में लगभग 80 प्रतिषत जनसंख्या हिंदू धर्म को मानने वाली है अतः कुल उत्तरदाताओं के प्रतिषत में व्याप्त 80 प्रतिषत हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व एक सामान्य तथ्य है।

शिक्षा –:

एक शिक्षित व्यक्ति बेहतर ढंग से अपने जीवन के चरणों को सुव्यवस्थित कर सकता है इसलिए उत्तरदाताओं की शिक्षा स्तर को जानना आवश्यक है जो कि इस प्रकार है –:

तालिका क्रमांक – 02

शैक्षणिक योग्यता

शिक्षा	आवृत्ति	प्रतिशत
अशिक्षित	30	10.0
प्राथमिक	90	30.0
माध्यमिक	30	10.0
हाईस्कूल	60	20.0
हायर सेकंडरी	90	30.0
कुल	300	100.0

सिर्फ 30 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिन्होंने हायर सेकंडरी तक की शिक्षा प्राप्त की है। वर्तमान में जिस प्रकार शिक्षा का स्तर बढा है यह स्थिति चिंताजनक है। शिक्षा के उचित स्तर का अभाव होने के कारण श्रमिक

वर्ग अपने अधिकारों को जानने में सक्षम नहीं है जिसके कारण उनका शोषण किया जा सकता है। श्रमिकों के लिए बनाये गये विभिन्न कानूनों एवं अधिनियमों को समझने के लिए उचित शिक्षा स्तर की आवष्यकता होती है क्योंकि उनकी भाषा कठिन होने के साथ–साथ प्रयुक्त षब्द एवं वाक्यों को ठीक प्रकार से परिभाषित करना आवश्यक होता है। इसलिए यह आवश्यक है कि श्रमिक के रूप में कार्य कर रहे उत्तरदाताओं में शिक्षा के प्रसार और जागरूकता को बढाने की आवश्यकता है।

वैवाहिक स्थिति –:

विवाह के पश्चात् व्यक्ति के ऊपर परिवार की अधिक जिम्मेदारी आ जाती है। ठीक उसी प्रकार अविवाहित स्त्री–पुरूष अधिक स्वतंत्रता एवं जीवन में कम जिम्मेदारियों का अनुभव करते है अतः उत्तरदाताओं की वैवाहिक स्थिति को ज्ञान करना आवष्यक है जो कि इस प्रकार है –:

तालिका क्रमांक – 03

वैवाहिक स्थिति

वैवाहिक स्थिति	आवृत्ति	प्रतिशत
विवाहित	180	60.0
अविवाहित	90	30.0
तलाकशुदा	30	10.0
कुल	300	100.0

अधिकतम उत्तरदाता विवाहित है अतः उनके ऊपर परिवार की जिम्मेदारी है। विषेष रूप से परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति उनके परिश्रम पर ही निर्भर होती है। जिसके कारण परिवार की आवश्यकताओं की पूर्ति के हिसाब से आय का स्तर होना आवष्यक है। आर्थिक रूप से सषक्त होने के बाद ही कोई परिवार अपने सर्वागीण विकास की दिषा में अग्रसर हो सकता है। वहीं अविवाहित उत्तरदाताओं को अपने भविष्य के हिसाब से अपनी आय को स्थिरता एवं एक आदर्श स्तर देना आवष्यक है। वर्तमान सामाजिक ताने–बाने एवं आधुनिकता की दौड में पारीवारिक आदर्शो का खंडन हो रहा है इसी का कारण है कि 10 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जो तलाकशुदा है।

परिवार का मुख्य व्यवसाय –:

किसी भी परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति उसके मुख्य व्यवसाय से ही होती है, अतः यह जानना आवष्यक है कि कपडा कारखानों में कार्यरत मजदूरों के परिवारों का मुख्य व्यवसाय क्या है, जो कि निम्न तालिका से जानने का प्रयास किया गया है –:

तालिका क्रमांक – 05

परिवार का मुख्य व्यवसाय

मुख्य व्यवसाय	आवृत्ति	प्रतिशत
कृषि	90	30.0
मजदूरी	120	40.0
अन्य	90	30.0
कुल	300	100.0

अधिकतम श्रमिक मजदूरी और कृषि के माध्यम से ही अपनी आर्थिक आवश्यकताओं की पूर्ति करते है। वास्तव में कपडा उद्योग में कार्य करने वाले मजदूरों में अधिक प्रतिशत स्थानीय निवासियों का होता है जो कि 20 से 30 किलो मीटर के अंदर निवास करते है। ऐसे मजदूर वास्तव में कृषक परिवारों से सम्बंध रखते है और कम कृषि भूमि होने के कारण मौसमी बेरोजगारी से बचने के लिए और परिवार की आर्थिक आवष्यकताओं की पूर्ति करने के लिए परिवार के युवा कारखानों में कार्य करते है। ऐसे श्रमिक जिनके पास पर्याप्त मात्रा में कृषि भूमि है मौसमी मजदूरी करते है और ऐसे कृषक परिवार जिनके पास कृषि जोत का आकार छोटा है कृषि को सहायक व्यवसाय मानकर वर्षभर कारखानों में कार्य करते है। इससे ज्ञात होता है कि वास्तव में कपडा उद्योगों में कार्य करने वाले मजदूर आर्थिक रूप से कमजोर होते है और अपने परिवार की आर्थिक आवष्यकताओं की पूर्ति करने के लिए कृषि और उद्योगों में मजदूरी करते है।

परिवार का स्वरूप –:

परिवार के पास उपलब्ध संसाधनों का बंटवारा परिवार के सदस्यों के मध्य होता है अतः उत्तरदाताओं के परिवार का स्वरूप क्या है यह जानना आवश्यक है जो कि निम्नानुसार है –:

तालिका क्रमांक –: 06

परिवार का स्वरूप

स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
एकाकी	270	90.0
संयुक्त	30	10.0
कुल	300	100.0

अधिकतम उत्तरदाता परिवार एकाकी स्वरूप में निवास करते है। वर्तमान समय में रोजगार के उचित अवसरों की तलाष में तेजी से पलायन हो रहा है जिसके कारण संयुक्त परिवार का विघटन हो रहा है। जनसंख्या का दबाव, जोत का छोटा आकार, आधुनिक संसाधनों एवं एक गुणवत्तापूर्ण जीवन की चाह मनुष्य को परिवार तथा अपने निवास से अन्यंत्र ले जा रही है। आधुनिक समाज के बदलते प्रतिमानों के कारण भी संयुक्त परिवारों का स्थान एकाकी परिवार ले रहे है जिसमें केवल पति–पत्नी और उनके बच्चे होते है।

मकान का स्वामित्व –:

स्वंय का मकान ना होने पर किराये का मकान लेना पडता है जिसका मासिक किराया देना पडता है जिससे परिवार पर आर्थिक बोझ आता है अतः उत्तरदाताओं के पास स्वंय के स्वामित्व का मकान है अथवा नहीं इसकी जानकारी लेना आवश्यक है जो कि निम्नानुसार है –:

तालिका क्रमांक – 07

मकान का स्वामित्व

स्वामित्व	आवृत्ति	प्रतिशत
किराया	90	30.0
कब्जा	30	10.0
कम्पनी का	180	60.0
कुल	300	100.0

40 प्रतिशत उत्तरदाता मजदूरों को अभी तक कम्पनी की तरफ से मकान नहीं दिये गये है, जिसके कारण वे अन्य जगहों पर निवास कर रहे है। सामान्यतः उद्योगों में कार्यरत मजदूर पलायन कर मजदूरी करने आते है अतः यहॉ उनके पास निवास रहने के लिए कोई पुष्तैनी घर नहीं होता है जिसके कारण उन्हें निवास सम्बधी परेषानी का समाना करना पडता है। किराये का घर लेने के कारण परिवार पर आर्थिक बोझ आता है क्योंकि मजदूरी का एक बडा हिस्सा तो किराया चुकाने में ही खर्च हो जाता है। कब्जाधारी मजदूर परिवार भी षांति से नहीं रह सकते है क्योंकि उन्हें किसी भी समय घर से निष्कासित होने का भय सताता रहता है।

पैतृक आवास का स्वरूप –:

यदि किसी व्यक्ति का पैतृक आवास पक्का रहता है तो उसे परिवार की सुरक्षा की चिंता नहीं होती है। अतः यह जानना आवष्यक है कि उत्तरदाता के पैतृक आवास का स्वरूप किस प्रकार है, जो कि निम्नानुसार है –:

पैतृक आवास का स्वरूप

तालिका कमांक – 08

स्वरूप	आवृत्ति	प्रतिशत
कच्चा	210	70.0
अर्द्ध–पक्का	90	30.0
कुल	300	100.0

अधिकतम उत्तरदाताओं के पुश्तैनी आवासों का स्वरूप कच्चा है। मात्र 30 प्रतिशत परिवार ही ऐसे है जिनके पैतृक आवास का प्रकार अर्द्ध–पक्का है। ऐसा एक भी परिवार नहीं है जिसके पास पक्का पैतृक आवास हो। इससे ज्ञात होता है कि पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र में कपडा उद्योग अंतर्गत कार्य करने वाले श्रमिकों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय है। यह आर्थिक संकट बताता है कि इसकी जडे कई सदी पुरानी है जिसके प्रभाव से परिवार अभी तक बाहर नहीं निकल पाया है। गॉव में निवास करना वाला भूमिहीन किसान कृषि मजदूरी कर अपना जीवन निर्वाह करता है जिसके कारण उसे मौसमी बेरोजगारी का सामना करना पडता है। यही कारण है कि वह कभी भी अपना विकास नहीं कर पाता है।

घर में सुविधा के साधन –:

मनुष्य को बेहतर तरीके से जीवन यापन करने के लिए कुछ महत्वपूर्ण आधुनिक संसाधनों की आष्यकता होती है जिनके अभाव में वर्तमान समय में जीवन निर्वाह कठिन है। अतः उत्तरदाता परिवारों के पास यह साधन है अथवा नहीं यह जानना आवष्यक है। घर में सुविधा के साधन सम्बंधी जानकारी निम्नानुसार है –:

तालिका कमांक – 09

घर में सुविधा के साधन

साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
मोबाईल	60	20.0
फोन	120	40.0
साईकल	30	10.0
मोटर साईकल	90	30.0
कुल	300	100.0

पीथमपुर औद्योगिक क्षेत्र अंतर्गत कपडा उद्योगों में कार्यरत मजदूरों की आर्थिक स्थिति बहुत ही खराब है। वर्तमान समय में उपरोक्त तालिका में प्रदर्षित सुविधा के साधन तकनीकी विकास के कारण बहुत कम दर पर मिल जाते है जिससे कि सभी वर्ग के लोग अपनी–अपनी स्थिति अनुसार इनके अलग–अलग प्रारूपों का चयन कर इनका उचित उपयोग कर सकते है। इनके उपयोग से जीवन सरल एवं सुखद बन जाता है। किंतु कपडा उद्योगों में कार्य करने वाले मजदूर इतने गरीब है कि सस्ते आधुनिक यंत्रों अथवा वस्तुओं का उपयोग भी नहीं कर पा रहे है। वर्तमान समय में मोबाईल, साईकल और मोटर साईकल जैसे साधनों का उपयोग सब्जी बेचने वाले, ढेला चलाने वाले लोग भी करते है जिनकी आर्थिक स्थिति कुछ अधिक अच्छी नहीं है।

कार्यस्थल पर भेदभाव –:

औद्योगिक क्षेत्रों में भी साधारण मजदूरों एवं कर्मचारियों के साथ उच्च अधिकारियों अथवा उद्योगपतियों द्वारा भेदभाव किया जाता है। अतः यह जानना आवश्यक है कि उत्तरदाताओं के साथ किसी प्रकार का भेदभाव किया जाता है अथवा नहीं जो कि इस प्रकार है –:

तालिका कमांक – 17

कार्यस्थल पर भेदभाव

भेदभाव	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	210	70.0
नहीं	90	30.0
कुल	300	100.0

मजदूर वर्ग के कर्मचारियों के साथ भेदभाव किया जाता है जो कि एक अषोभनीय तथ्य है। किसी भी व्यक्ति का अपना आत्मसम्मान और स्वाभीमान होता हैं। मनुष्य के साथ उसके कार्यो के स्तर के आधार पर भेदभाव करना बिलकुल गलत है। आवष्यकता तो इस बात की है कि मजदूरों के साथ तो बहुत ही नरमी और प्रेम–भाव से व्यवहार करना चाहिये ताकि उनकी अपनी समस्याऍ कुछ कम हो और वे अधिक प्रभावषीलता के साथ कार्य करे। षारीरिक के साथ कर्मचारियों का मानसिक रूप से स्वस्थ रहना भी आवष्यक होता है जिससे कि मजदूर अपने कार्य में एकाग्र हो सके। पद, षिक्षा एवं कार्य स्तर के आधार पर भेदभाव करना पूर्णरूपेण गलत है। प्रत्येक व्यक्ति का अपने सम्मान पर अधिकार होता है और किसी के अधिकारों का दमन करने की बजाये उनका रक्षण करना चाहिये कि यही एक षक्तिषाली और योग्य प्रबंधक की पहचान है।

घर में भोजन बनाने का साधन –:

जीवन के लिए वायु के बाद सबसे प्राथमिक वस्तु भोजन ही है। जिसे सभी घरों में दैनिक रूप से बनाया जाता है। जहॉ आधुनिक समय में भोजन पकाने के तकनीकी उपकरण आ गये है जो धुँआ रहित होते है तो अभी भी गॉवों और गरीब परिवार मिट्टी के चूल्हे पर खाना बनाते है जिसके धुँए से अनेक बीमारियों का जन्म होता है। अतः यह जानना आवष्यक है कि कपडा उद्योग में कार्य करने वाले मजदूरों के घरों में भोजन पकाने के क्या साधन है। घर में भोजन पकाने के साधन सम्बंधी जानकारी निम्नलिखित तालिका के माध्यम से प्रस्तुत की गई है –:

तालिका क्रमांक – 19

घर में भोजन बनाने के साधन

साधन	आवृत्ति	प्रतिशत
एलपीजी	90	30.0
स्टोव्ह	30	10.0
चूल्हा	150	50.0
अन्य	30	10.0
कुल	300	100.0

सिर्फ 30 प्रतिशत मजदूर परिवार ऐसे है जिनके घरों में खाना पकाने के लिए एलपीजी गैस का उपयोग किया जाता है, अन्य परिवार अभी भी पुराने और परम्परागत साधनो का उपयोग करते है जो कि स्वास्थ्य और ऊर्जा खपत दोनों ही दृष्टि से सही नहीं है। इससे ज्ञात होता है कि कपडा उद्योग मे कार्यरत मजदूरों की आर्थिक स्थिति दयनीय है जिसके कारण वे एलपीजी गैस का उपयोग नहीं कर पाते है। वर्तमान समय में बढी एलपीजी गैस की कीमते भी इसके लिए दोषी है। षासन द्वारा गरीब परिवारों के लिए चलायी जाने वाले उज्ज्वला योजना का भी प्रभाव आर्थिक रूप से गरीब तबके के परवारों में देखने को नहीं मिलता है।

घर में शौचालय –:

तालिका क्रमांक – 20

घर में शौचालय

घर में शौचालय	आवृत्ति	प्रतिशत
हॉ	90	30.0
नहीं	210	70.0
कुल	300	100.0

अधिकतम मजदूर परिवार शौच करने के लिए बाहर जाते है। बाहर शौच करने के कारण परिवार के सदस्यों को अनेक प्रकार के जोखिमों को सामना करना पडता है। प्रायः शौच करने के लिए ऐसी जगहों की चुना जाता है जो सुनसान हो तथा जहॉ जंगल या झाडियॉ हो जिनके पीछे छिपकर शौच की जा सके।

बच्चों की शिक्षा हेतु विद्यालय का प्रकार –:

वर्तमान समय में शासकीय विद्यालयों में शिक्षा की गुणवत्ता का स्तर घट रहा है। शासकीय शिक्षक बच्चों की शिक्षा पर ध्यान नहीं देते है। इसलिए प्रत्येक माता–पिता की यह धारणा होती है कि उनके बच्चे किसी अच्छे प्राइवेट स्कूल में शिक्षण हेतु जाये। किंतु प्राइवेट स्कूलों की शिक्षण राशि बहुत होती है अतः यह जानना आवश्यक है कि श्रमिक उत्तरदाता के बच्चे कौन से विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने के लिए जाते है। बच्चों की शिक्षा हेतु विद्यालय के प्रकार सम्बंधी आंकडे निम्नानुसार है –:

तालिका कमांक – 21

विद्यालय का प्रकार

प्रकार	आवृत्ति	प्रतिशत
शासकीय	120	40.0
विद्यालय नहीं जाते है	30	10.0
लागू नहीं	150	50.0
कुल	300	100.0

कपडा उद्योग में कार्य करने वाले श्रमिकों के बच्चे शासकीय विद्यालयों में शिक्षण प्राप्त करते है क्योंकि शासकीय विद्यालयों में शिक्षण हेतु कोई राशि नहीं ली जाती है। गैर शासकीय शिक्षण संस्थानो में शिक्षण कार्य करवाना बहुत महॅगा है। इससे यह भी ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं की आर्थिक स्थिति बिलकुल भी अच्छी नहीं है। 10 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे है जिनके बच्चे विद्यालय नहीं जाते है इससे ज्ञात होता है कि उत्तरदाताओं में अशिक्षा और जागरूकता का भारी अभाव है।

उपरोक्त तालिकाओं के विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि अध्ययन क्षेत्र में कपड़ा कारखाना श्रमिकों की सामाजिक स्थिति सामान्य है परंतु बहुत अच्छी नहीं है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण विभिन्न प्राकर की सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिस कारण से उनका विकास मंद गति से हो रहा है तथा कुछ परिवारों का तो विकास हो ही नहीं रहा है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अग्रवाल ए, एन, भारतीय मजदूरों की समस्याएँ, सौम्य पब्लिकेषंस, नई दिल्ली, 2002

फारूक अहमद, भारत का श्रम सुचना क्षेत्र, रावत पब्लिकेषंस, नई दिल्ली, 1994

दामले दत्त कुमार, भारत में श्रम षिक्षा, डिस्कवरी पब्लिकेषंस, नई दिल्ली, 2007

बोरे सुजाता, कपडा उद्योग और श्रम स्वास्थ्य, अनंत पब्लिषर्स, जयपुर, 2003

चटोपाध्याय सुबोध, भारतीय श्रमिक समस्याएँ एवं संभावनाएँ, मिनरवा पब्लिकेशन 2009